आज नहीं तो कल

आत्मानुभवी सत्पुरुषों के सम्पर्क में आकर शुद्धात्मतत्त्व के प्रतिपादक शास्त्रों को पढ़कर आत्मा की चर्चा-वार्ता करना अलग बात है और शुद्धात्मा का अनुभव करना अलग बात है।

अधिकांश जगत तो गतानुगतिक ही होता है। जो जिसप्रकार के वातावरण में रहता है; उसीप्रकार की बातें करने लगता है, व्यवहार करने लगता है; परन्तु वस्तु की गहराई तक बहुत कम लोग पहुँच पाते हैं। अधिकांश तो हाँ में हाँ मिलानेवाले और ऊपर से वाह-वाह करनेवाले ही होते हैं।

जो लोग तत्त्व की गहराई तक पहुँच जाते हैं, उन्हें तो परमतत्त्व की प्राप्ति हो ही जाती है; किन्तु जो अपनी स्थूल बुद्धि के कारण परमतत्त्व को प्राप्त नहीं कर पाते हैं, उन्हें भी इतना लाभ तो होता ही है कि वे जगत के वासनामय कषायमय विषाक्त वातावरण से तो बहुत-कुछ बचे ही रहते हैं, उनका जीवन सहज सात्त्विक बना रहता है, परिणामों में भी निर्मलता बनी रहती है।

तथापि यदि अच्छी होनहार हो तो काल पाकर उनका भी पुरुषार्थ जागृत हो जाता है और आज नहीं तो कल वे भी निजतत्त्व तक पहुँच ही जाते हैं। **ह्न सत्य की खोज, पृष्ठ : 205**

अब रात्रि 10.20 पर ...

साधना चैनल पर प्रतिदिन प्रसारित हो रहे डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचनों का समय अब प्रातः के बजाय रात्रि १०.२० बजे हो गया है। अतः समस्त साधर्मीजन समय का ध्यान रखते हुये प्रवचनों का लाभ लें।

साधना चैनल आपके यहाँ न आता हो तो श्री पंकज जैन (साधना चैनल) से मोबाइल नं. 09312506419 पर सम्पर्क करें।

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का, घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 22 264 अंक :12

प्रवचनसार पद्यानुवाद

ज्ञेयतत्त्वप्रज्ञापन महाधिकार

द्रव्यसामान्य प्रज्ञापन अधिकार

अणु रहे जितने गगन में वह गगन ही परदेश है।
अरे उस परदेश में ही रह सकें परमाणु सब।।१४०।।
एक दो या बहुत से परदेश असंख्य अनंत हैं।
काल के हैं समय अर अवशेष के परदेश हैं।।१४१।।
इक समय में उत्पाद-व्यय यदि काल द्रव में प्राप्त हैं।
तो काल द्रव्यस्वभावथित ध्रुवभावमय ही क्यों न हो।।१४२।।
इक समय में उत्पाद-व्यय-ध्रुव नाम के जो अर्थ हैं।
वे सदा हैं बस इसलिए कालाणु का सद्भाव है।।१४३।।
जिस अर्थ का इस लोक में ना एक ही परदेश हो।
वह शून्य ही है जगत में परदेश बिन न अर्थ हो।।१४४।।

ज्ञान-ज्ञेयविभागाधिकार

सप्रदेशपदार्थनिष्ठित लोक शाश्वत जानिये।
जो उसे जाने जीव वह चतुप्राण से संयुक्त है।।१४५।।

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

पर संबंध ही दु:ख का कारण

पूज्यपाद आचार्य श्री देवनन्दि के प्रसिद्ध ग्रन्थ इष्टोपदेश के 28 वें श्लोक पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। मूल श्लोक इसप्रकार है ह्न

दु:खसन्दोह भागित्वं संयोगादिह देहिनाम्।
त्यजात्म्येनं तत: सर्वं मनोवाक्कायकर्मभि: ।।28।।

इस संसार में देहादिक के संयोग से प्राणियों को दु:खसमूह भोगना पड़ता है अर्थात् अनंतदु:ख भोगना पड़ता है; इसलिये उन समस्त संबंधों को मैं मन-वचन-कायपूर्वक त्यागता हूँ।

(गतांक से आगे...)

शरीर तो जड़ है, धूल है, परद्रव्य है; उससे आत्मा को कोई लाभ नहीं होता। उस शरीर की क्रिया आत्मा नहीं करता, उसकी क्रिया उसके अपने द्रव्य-गुण-पर्याय से होती है। आत्मा हो तो शरीर चलता है, आत्मा हो तो वाणी बोलती है ह्न ऐसा तीन काल और तीन लोक में कभी भी संभव नहीं होता। शरीर-वाणी-मन का अपना स्वयं का अस्तित्व है, उससे उनका स्वयं का कार्य होता है।

जिसप्रकार श्रीफल में सफेद गोला ह्न छाल, काचली और लाल छाल से भिन्न है; उसीप्रकार आत्मा ह्न शरीररूप छाल, जड़ कर्मरूप काचली और पुण्य-पाप भावरूप लाल छाल से पूर्णत: भिन्न ज्ञानानन्दस्वरूप, सत्चिदानन्द, आनन्दकन्द प्रभु है; किन्तु इस जीव ने कभी उसकी दृष्टि ही नहीं की है। अपने स्वभाव से रहित शरीर-मन-वाणी से अपना कार्य मानना अथवा शरीरादि मेरे हैं ह्न ऐसा मानना मिथ्यादर्शन है, संसार है।

संसार आत्मा से बाहर नहीं है, वह आत्मा का ही दोष है। संसार इस जीव की विपरीत बुद्धि है। यह विपरीत श्रद्धा आत्मा की ही पर्याय में है, उससे अन्यत्र नहीं; इसलिये स्त्री, पुत्र, परिवार, घर आदि छोडने से संसार नहीं छूटता, लेकिन अपने स्वभाव की श्रद्धा करके शरीरादि परपदार्थों के संबंध में अपनापन छोडे तो उसका

संसार अवश्य छूटता है। मिथ्यादर्शन छूटे बिना मुक्ति नहीं होती है।

शरीर, मन, वाणी, स्त्री, पुत्र, आदि का अस्तित्व उनका उनसे है। एक समय के लिये भी इनका अस्तित्व मेरे रूप नहीं हुआ है। उनका कार्य उनके स्वयं में उनसे होता है। मेरा अस्तित्व मेरे में है। मेरे ज्ञानादि ह्न शरीर-मन-वाणी के निमित्त से भी कार्य नहीं करते।

जगत में प्रत्येक द्रव्य का अस्तित्व है। जीव का अस्तित्व है। शरीर-मन-वाणी आदि जड़पदार्थों का भी अस्तित्व है और उन सभी के साथ जीव की विपरीत मान्यता का भी अस्तित्व है, लेकिन एक द्रव्य का अस्तित्व अन्य द्रव्य में नहीं है ह्न ऐसा जानकर निज अस्तित्व की दृष्टि करे तो ही सच्ची श्रद्धा होती है, स्व-पर का भेदविज्ञान होता है।

भेदज्ञान ही ज्ञान है, शेष सभी अज्ञान ह्न आत्मा विकार, शरीर, मन-वाणी आदि समस्त परद्रव्यों से भिन्न है। उसमें आत्मा का कोई हस्तक्षेप नहीं है। आत्मा का अस्तित्व आत्मा के सिवा अन्य किसी से नहीं है। इसप्रकार परद्रव्यों की एकत्वबुद्धि छोड़कर भेदज्ञान का अभ्यास करना ही मुक्ति का उपाय है।

इसी बात को आचार्य अमृतचन्द्रदेव समयसारकलश में कहते हैं कि ह्न

भेदविज्ञानत: सिद्धा, सिद्धा ये किल केचन:।
तस्येवाभावतो बद्धा, बद्धा ये किल केचन:।।

अनंतकाल के प्रवाह में अनंत सिद्ध हुये हैं, वे सब भेदविज्ञान से ही हुये हैं और जो कोई बंधे है वे भेदविज्ञान के अभाव में ही बंधे है। देह-मन-वाणी और रागादि विकल्पों का लक्ष हटाकर अपने स्वभाव का लक्ष करना ही मिथ्यादर्शन से मुक्ति का उपाय है। सम्यग्दर्शन के आधार से केवलज्ञानरूप शुद्ध संपूर्ण निर्मल दशा की प्राप्ति एकमात्र भेदविज्ञान से ही होती है।

आचार्यदेव ने तो स्पष्टरूप से संसार और मोक्ष का कारण बता दिया है। 21वीं गाथा में भी यही कहा था कि आत्मा लोकालोक को जाननेवाला है। वहाँ लोकालोक और आत्मा दोनों के अपने-अपने अस्तित्व की बात आयी थी। आत्मा शरीरप्रमाण है ह्न ऐसा कहने में आत्मा लोकव्यापक है ह्न इस बात का निषेध है। ध्यान के समय

आत्मा अपने शरीर प्रमाण स्व-क्षेत्र में ही एकाग्र होता है, लोकप्रमाण क्षेत्र में नहीं; इसलिये आत्मा नित्य है, अनन्त सौख्यवान है, अत्यन्त आनन्दमय, नित्य, लोकालोक को जाननेवाला है ह्न ऐसा कहा जाता है। अपने निज आत्मा को मैं अपने ही स्वसंवेदन से अनुभव कर सकता हूँ। उसमें मुझे किसी परद्रव्य की सहायता की जरूरत नहीं है।

प्रत्येक आत्मा सर्वज्ञशक्ति को धारण करनेवाला है, अनंत आनन्द से युक्त है। शरीरप्रमाण नाना क्षेत्रवाला होने पर भी अपने भाव से अनंत शक्ति संपन्न है और पर्याय पलटने के समय द्रव्य कायमस्वरूपी रहनेवाला है।

अनादिकाल से जीव अपने स्वभाव के स्व-संवेदन को भूलकर विकार का वेदन करता आ रहा है। शरीर, वाणी, स्त्री आदि परद्रव्यों का वेदन तो आत्मा करता ही नहीं हैं; किन्तु उनका लक्ष करके पुण्य-पाप और रागादि विकारों का वेदन भी आत्मा नहीं करता; क्योंकि यह वेदन ही दु:ख है, संसार है और मैं सम्पूर्ण विकारों से रहित ज्ञानानन्दस्वभावी हूँ ह्न ऐसी श्रद्धा, ज्ञानपूर्वक पर्याय में आनन्द का वेदन होता है, स्व-संवेदन होता है, उसी का नाम मोक्षमार्ग है।

परद्रव्यों की ममता से आत्मा दु:ख के समूह प्राप्त करता है। पर के संयोग से आत्मा को दु:ख का अनुभव होता है। दु:ख हो और उसका वेदन भी हो, उसका नाम संसार है। जगत में किसीप्रकार का दु:ख ही नहीं है ह्न ऐसा कोई मानता हो तो वह मिथ्या है। यदि दु:ख नहीं होता तो दु:ख के नाश का उपाय भी नहीं होता; इसलिये जगत में दु:ख भी है और उसके नाश का उपाय भी है।

अनादिकाल से परसंग करने के कारण अज्ञानी जीव दु:खी हो रहा है। इस परसंग को (अभिप्राय में) छोड़कर अपने स्वभाव का आश्रय करना ही दु:ख के नाश का उपाय है। इसलिये मैं मन-वचन-कायपूर्वक सर्व संग छोड़कर अपने स्वभाव का आश्रय करता हूँ। **(क्रमश:)**

राग-द्वेष कम करने का सरलतम उपाय अपने सुख-दु:ख के कारण अपने में ही खोजना है, मानना है, जानना है। **ह्न बिन्दु में सिन्धु, पृष्ठ-15**

कारणशुद्ध और कार्यशुद्ध जीव

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार की नौ वीं गाथा पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्म-रसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है –

जीवा पोग्गलकाया धम्माधम्मा य काल आयासं ।
तच्चत्था इदि भणिदा णाणागुणपज्जएहिं संजुत्ता ।।9।।

विविध गुण पर्यायों से युक्त जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल ह्न ये तत्त्वार्थ कहे हैं।

(गतांक से आगे ...)

शुद्धसद्भूतव्यवहारनय से केवलज्ञानादि शुद्धगुणों का आधार होने के कारण कार्यशुद्ध जीव है।

शुद्धसद्भूतव्यवहारनय से जो जीव केवलज्ञानादि शुद्धगुणों का आधार है अर्थात् कारणशुद्धजीव में से जिसने केवलज्ञानादि शुद्ध कार्य प्रकट किया है, उसे यहाँ कार्यशुद्धजीव कहा है। यहाँ पर्याय की बात है, त्रिकाली की बात नहीं; क्योंकि यह शुद्धसद्भूतव्यवहारनय का विषय है।

केवलज्ञान पर्याय भी व्यवहार है, वह भी नवीन प्रकट होती है; त्रिकाल नहीं है। शुद्ध चिदानन्द अखण्ड परिपूर्ण भगवान आत्मा निश्चय है और उसके अवलम्बन से जो केवलज्ञानादि प्रकट हुआ, वह शुद्धसद्भूतव्यवहार है। यहाँ केवलज्ञानादि शुद्धपर्याय है; इसलिये **शुद्ध**, अपनी पर्याय है; इसलिये **सद्भूत** तथा भेद पड़ा इसलिये **व्यवहार** है; इसप्रकार केवलज्ञान को शुद्धसद्भूतव्यवहार कहा गया है। ह्न ऐसा केवलज्ञान जिसको प्रकट हुआ वह कार्यशुद्धजीव है। यह उत्पादरूप नवीन पर्याय प्रकट हुई है। इस केवलज्ञान पर्याय को यहाँ शुद्धगुण कहा गया है ह्न ऐसे शुद्धगुण का जो आधार है, उसे यहाँ कार्यशुद्धजीव कहा गया है।

अशुद्धता संसार पर्याय है, अल्पशुद्धता मोक्षमार्ग पर्याय है और पूर्ण शुद्धता मोक्षपर्याय है ह्न इसप्रकार यह तीनों ही व्यवहार है।

जीव के वर्णन में तीन प्रकार बतलाये हैं ह्न

(1) दश प्राणों से जीये, वह जीव है ह्न यह व्यवहार है।

(2) भावप्राण अर्थात् चैतन्य प्राण से जीये, वह जीव है ह्न यह निश्चय है।

(3) केवलज्ञानादि प्रकट हुए और उनका आधार जीव है, इसे कार्यशुद्धजीव कहते हैं ह्न यह शुद्धसद्भूतव्यवहार है।

त्रिकाल एकरूप आनंदकन्द शक्ति का पिण्ड कारणशुद्धजीव है, इसकी बात आगे आयेगी।

प्रत्येक जीव शक्ति अपेक्षा शुद्ध है अर्थात् सहज ज्ञानादि सहित है; अत: प्रत्येक जीव कारणशुद्धजीव है। जो कारणशुद्ध जीव की भावना करता है, उसका ही आश्रय करता है; वह व्यक्ति अपेक्षा भी शुद्ध अर्थात् कार्यशुद्धजीव (केवलज्ञानादि सहित) होता है। शक्ति में से ही व्यक्ति होती है, अत: शक्ति कारण है और व्यक्ति कार्य है; ऐसा होने से शक्तिरूप शुद्धतावाले जीव को कारणशुद्धजीव कहते हैं और व्यक्त शुद्धतावाले जीव को कार्यशुद्धजीव कहते हैं। कारणशुद्ध अर्थात् कारण अपेक्षा से शुद्ध, शक्ति अपेक्षा से शुद्ध। कार्यशुद्ध अर्थात् कार्य अपेक्षा से शुद्ध, व्यक्त अपेक्षा से शुद्ध।

जो त्रिकाल चिदानन्द कारणशुद्धजीव की भावना करता है, उसमें श्रद्धा-ज्ञान-रमण करता है, उसे केवलज्ञानादि शुद्धकार्य प्रकट होते हैं अर्थात् वह कार्यशुद्ध जीव हो जाता है।

देखो ! यह भव्यजीवों के कानों में अमृत उड़ेलने जैसी सरस मधुर बात है। अन्तर में मौजूद अनादि-अनन्त एकरूप सदृश स्वभाव कारणपरमात्मा है और उसके आश्रय से प्रकट होनेवाली पूर्णदशा कार्यपरमात्मा है। केवलज्ञानादि शुद्धपर्यायवाले जीव होते हैं, इसप्रकार प्रतीति करना तो व्यवहार श्रद्धा है। केवलज्ञान प्रकट हुआ; अत: नवीन दशा है, व्यवहार है और उसके कारणरूप शुद्ध चैतन्यस्वरूप जो त्रिकाल ध्रुव है, वह कारणशुद्धजीव है।

सिद्ध भगवान तथा अरिहंत भगवान दोनों ही कार्य परमात्मा है, उन्हें ही कार्य शुद्धजीव कहते हैं और उसके कारणरूप जो त्रिकाली एकरूप स्वभाव है, वह

कारणपरमात्मा है। उसे ही यहाँ कारणशुद्धजीव कह रहे हैं। पहले परमात्मा का वर्णन था, इसलिये वहाँ परमात्मा में कारण-कार्य स्थापित किया था और अब यहाँ जीव का वर्णन है; अत: जीव में शुद्धकारण और शुद्धकार्य स्थापित किया है। कैसी अलौकिक अपूर्व बात है।

जगत में अनंत जीव कार्यशुद्धजीव हैं और उसका कारणरूप ध्रुवस्वभाव कारणशुद्धजीव है। अनादि काल से अनंत जीवों को इसी के आश्रय से मोक्षमार्ग और केवलज्ञानादि प्रकट होते हैं।

त्रिकालशक्ति कारण है और उस कारण से ही कार्य प्रकट होता है; इसलिये उसे कारणशुद्धजीव कहा जाता है और उसके आश्रय से जो केवलज्ञान प्रकट हुआ, वह कार्यशुद्धजीव है।

यहाँ निश्चय मोक्षमार्ग को भी परमात्मदशा का कारण नहीं कहा; क्योंकि वह अधूरी दशा है। उसके आश्रय से परमात्मदशा प्रकट नहीं होती; पर कारणशुद्धजीव तो शक्तिरूप से सदा विद्यमान है, उसमें से होनेवाली व्यक्ति ही कार्यशुद्धजीव है। कारण अर्थात् शक्ति और कार्य अर्थात् व्यक्ति।

आगम में ऐसे जीवतत्त्व का वर्णन किया है। केवलज्ञान-दर्शनादि चतुष्टय जिसके प्रकट हुये हैं, वह कार्यशुद्धजीव है। पूर्णदशा प्राप्त आत्मा को भी जीव ही कहा जाता है। अधूरीदशावाले को जीव और पूर्णदशा वाले को आत्मा कहा जाये ह्न ऐसा भेद नहीं है। पूर्ण को जीव भी कहते हैं और अधूरे को आत्मा भी कहते हैं। अभिप्राय यह है कि जीव और आत्मा भिन्न-भिन्न वस्तुयें नहीं है। पूर्णदशा प्रकट हुई, उसको यहाँ कार्यशुद्धजीव कहा है।

अब मतिज्ञानादि विभावगुणों का आधार अशुद्धजीव है और शुद्धनिश्चय से सहज ज्ञानादि परमस्वभाव गुणों का आधार होने से कारणशुद्धजीव है - यह बात करेंगे।

आप्त, आगम और तत्त्व की श्रद्धा व्यवहारसम्यक्त्व है, उसमें से यह तत्त्वों का वर्णन चल रहा है। व्यवहार सम्यग्दर्शन के वर्णन के साथ ही निश्चय सम्यग्दर्शन का स्वरूप भी आ जाता है। सर्वज्ञ भगवान अठारह दोष रहित हैं, उनकी वाणी वीतरागी है। उस वाणी में जीवादि तत्त्व कहे हैं, जिसमें से यह जीवतत्त्व का वर्णन है।

जीव को संग्रहनय की अपेक्षा देखें तो सभी संसारी जीवों को लक्ष्य करके कहा कि दश प्राणों से जो जीता है, जिया है और जियेगा, वह जीव है। इसमें सिद्ध सम्मिलित नहीं है। संसार दशा में आत्मा के इन्द्रिय, मन, शरीरादि का संयोग होता है, उनसे आत्मा जीता है ह्न ऐसा संग्रहनय का कथन है। दशप्राण तो जड़ है; किन्तु जीव उनके संयोग में रहता है; इसलिये दशप्राणों से जीनेवाले को उपचार से जीव कहा जाता है। यह संसारी जीवों की बात है।

निश्चय से भावप्राण को धारण करनेवाला होने से जीव है, यह बात समस्त जीवों पर लागू पड़ती है। वास्तव में आत्मा जड़ प्राणों को धारण नहीं करता; क्योंकि वह तो अमूर्तिक चैतन्य है और शरीरादि जड़ मूर्तिक है, वह आत्मा से भिन्न है। आत्मा तो अपनी भावेन्द्रियों को धारण करता है। वह अरूपी चैतन्यसत्ता को धारण करके जीवित है, इसलिये जीव है।

पर्याय में जो अधर्मभाव है, उसे टालकर निर्मलदशा प्रकट करने का नाम धर्म है। शरीरादि मैं हूँ ह्न ऐसी मान्यता अधर्म है और देहादि से भिन्न चैतन्यस्वरूप भावप्राणवाला आत्मा है ह्न ऐसा पहिचानना धर्म है।

निश्चय से ज्ञानदर्शनमय भाव ही आत्मा का प्राण है। इन्द्रियादि तो संयोगी वस्तुयें हैं। उनका तो वियोग हो जाता है; किन्तु आत्मा के चैतन्यप्राण का वियोग कभी नहीं होता ह्न ऐसा जाने बिना विपरीत मान्यता नहीं टलती और सम्यग्ज्ञान नहीं होता।

वस्तु का जैसा स्वरूप है, वैसे स्वरूप में ज्ञान को ले जाना न्याय अर्थात् सम्यग्ज्ञान कहलाता है। सर्वज्ञदेव ने जगत में छह द्रव्य देखे हैं, उनमें से यहाँ जीव द्रव्य का वर्णन चल रहा है।

(1) जीव दश प्राणों से जीता है ह्न ऐसा कहना संग्रह नय है।

(2) चैतन्यरूप भाव प्राणों से जीता है ह्न यह निश्चय है।

(3) व्यवहार से द्रव्यप्राणों से जीता है, द्रव्यप्राण तो जड़ है, उनसे आत्मा जीता है ह्न ऐसा कहना उपचार है।

(4) शुद्धसद्भूतव्यवहार से केवलज्ञानादि शुद्धगुणों का आधार होने के कारण कार्यशुद्धजीव है। **(क्रमश:)**

शक्तियों का संग्रहालय : भगवान आत्मा

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम समयसार नामक ग्रन्थाधिराज पर परमपूज्य आचार्य अमृतचन्द्रदेव ने 'आत्मख्याति' नामक संस्कृत टीका लिखी है। उसके अन्त में परिशिष्ट के रूप में अनेकान्त का विस्तृत वर्णन करते हुये आत्मा की 47 शक्तियों का वर्णन किया है, साथ ही अनेक कलश भी लिखे हैं। उन पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी ने समय-समय पर अतिमहत्त्वपूर्ण प्रवचन किये हैं, जो पाठकों के लाभार्थ क्रमशः प्रस्तुत हैं।

(गतांक से आगे .....)

कर्म के निमित्त से जो राग-द्वेषमय पर्याय उत्पन्न हुई, वह बन्धजनित पर्याय है। भावबन्ध बन्धजनित अवस्था है, यह बंधजनित पर्याय आत्मा की वस्तु नहीं है। उसे अपनी मानना अज्ञान है, मिथ्याभाव है। यह बंधजनित पर्याय वस्तुतः कर्म के कारण उत्पन्न नहीं होती; यह अपनी तत्समय की योग्यता के कारण उत्पन्न होती है, इसे कर्मजनित कहना व्यवहारनय है। शास्त्रों में ऐसे व्यवहारनय के कथन आते हैं, उन्हें निमित्त का ज्ञान कराने के लिये किया गया कथन समझना चाहिये।

अहा ! स्वयं शुद्ध चिदानन्दघन प्रभु है, उसे घात करके जो विकारी पर्याय अपने में उत्पन्न होती है, वह भी उसके अपने कारण से उत्पन्न होती है। ये जो महाव्रतादि के अथवा भक्ति के विकल्प होते हैं; वे राग हैं, विभाव हैं, संयोगीभाव हैं। उसको चैतन्यस्वभाव के साथ एकपनेरूप मानना द्वैत है, विसंवाद है। गाथा-3 में आता है कि भगवान आत्मा से पर, राग का संबंध कहना ह्न विसंवाद करनेवाली कथा है तथा द्रव्यस्वभाव में एकत्व प्राप्त करना सर्व सुंदर है।

देखो ! जिसके अस्तित्त्व में अकेला ज्ञानानन्दस्वभाव भरा है, उसको भी निजसत्ता की दृष्टि बिना राग पर लक्ष्य जाने से अज्ञान उत्पन्न होता है। मैं तो एक चिन्मात्रवस्तु हूँ। ज्ञान में राग नहीं एवं राग में ज्ञान नहीं है ह्न यह परमार्थ सत्य है; तथापि अनादि निगोद से लेकर अज्ञानी को स्व-पर की एकता से अज्ञान उत्पन्न हो रहा है। शुद्ध चैतन्य तो अकेला अद्वैत है। इसमें राग को, पर को मिलाने से द्वैत हुआ है। यह द्वैत जीव को महा दुःखद है, विसंवाद करनेवाला है। इस राग की पकड़ के कारण ज्ञानानन्द प्रभु दूर रह गया, स्वरूप की प्राप्ति में विघ्न पड़ गया।

अरे भाई ! भगवान केवली तो यह कहते हैं कि मेरे सामने मत देख ! क्योंकि मेरे सामने देखते ही राग उत्पन्न होता है, उससे दुःख होता है; इसलिये तू अपनी स्वयं की ओर देख ! स्वसन्मुख हो और अन्तर में देख ! इससे तुझे आनंद प्रकट होगा।

अहा ! स्वस्वरूप आनंदकंद दूर हो जाने पर राग-द्वेष का ग्रहण हुआ और राग का ग्रहण होने पर राग की क्रिया के षट् कारक उत्पन्न हुये। रागादि मेरे कर्म और मैं रागादि का कर्त्ता..करण... इत्यादि अज्ञानरूप रागादि क्रिया के षट् कारक उत्पन्न हुये। यह भूल कैसे हुई और इसका परिणमन क्या होता है ? अब यह बताते हैं ह्न

अज्ञानी को अपनी भूल की खबर नहीं है। वह तो ऐसा समझता है कि ह्न दर्शनमोहनीय के उदय से मिथ्यात्व हुआ है, जबकि दर्शनमोह तो जड़ है और जो आत्मा की पर्याय में विकार होता है, वह चिदाभास है। दोनों के बीच अत्यंताभाव है। इसकारण कर्म आत्मा का कुछ भी नहीं कर सकते हैं। परमार्थ से भगवान आत्मा अबद्धस्पष्ट ही है।

अनादि से इस अज्ञानी जीव को द्रव्य की दृष्टि छूटी हुई है, इसकारण अनादि से ही परद्रव्य की पकड़ है। राग अपनी वस्तु नहीं होते हुये भी अज्ञान के कारण राग की पकड़ हो रही है, इससे राग की क्रिया के षट्कारक राग की पर्याय में है, कर्म आदि परद्रव्य में नहीं तथा द्रव्य-गुण में भी नहीं। द्रव्य-गुण तो त्रिकाल शुद्ध ही हैं।

जो मिथ्यादृष्टि नव ग्रैवेयक में जाते हैं, उनके शुक्ल लेश्या का परिणाम होता है; किन्तु यह कोई महत्त्वपूर्ण बात नहीं है। इन छहों लेश्याओं में रागभाव है, क्लेशभाव है। शुक्ल लेश्या भी कषाय के रंग से ही रंगी हुई है। लोग प्रशस्त राग को भला मानते हैं; किन्तु वस्तुतः तो ये भी कर्म की जाति के ही हैं। इनकी रुचि में आत्मा अनादि से स्वरूप से दूर ही रहा है।

'क्रिया के समस्त फल को भोक्ता' ऐसा जो शब्द है उसका अर्थ यह है कि जो राग-द्वेष उत्पन्न होते हैं, वह उसके फल को भोगता है। आत्मा का अनुभव तो है नहीं, स्वभावसन्मुखता है नहीं, अभी राग और विभाव की सन्मुखता है; इसलिये यह जीव इसकाल में राग-द्वेष का दुःख भोगता है।

यहाँ कहते हैं कि **तत्विज्ञानं ओघमग्नम्** अर्थात् दृष्टि ने ज्यों ही पलटा खाया, त्यों ही अन्दर राग की एकत्वबुद्धि मिटकर विज्ञानघनरूप हो जाती है। मैं विज्ञानघन आत्मा ही हूँ ह्न ऐसी दृष्टि होने पर सम्यग्दर्शन हो जाता है। विज्ञानघन के ओघ (समूह) में समा जाता है। द्रव्य में पारिणामिक भाव से मिल जाता है।

चाहे अज्ञान की क्षयोपशमदशा हो, चाहे सम्यग्ज्ञान की क्षयोपशम दशा हो ह्न ये नष्ट होकर जल में तरंग की भाँति द्रव्य में समा जाती है। भले राग की पर्याय हो या अज्ञान की पर्याय हो ह्न वह सत् है। वह व्ययरूप होकर अन्दर द्रव्य में योग्यतारूप से विलीन हो जाती है। यदि ऐसा न हो तो सत् का अभाव हो जायेगा और सत् का अभाव होने पर अन्दर में योग्यता ही नहीं रहेगी।

यहाँ तो यह कहते हैं कि वह अज्ञान अब विज्ञानघन के समूह में मग्न हो गया अर्थात् अज्ञान का व्यय होकर सम्यग्ज्ञान हो गया। पहले जो अज्ञानदृष्टि थी, विपरीत दृष्टि थी, पर्याय दृष्टि थी, वह पलटकर अब द्रव्यदृष्टि हो गई। मैं विज्ञानघन परमप्रभु हूँ ह्न इसप्रकार दृष्टि व ज्ञान का परिणमन हो गया। यह परिणमन हुआ है, विकल्प नहीं। जबतक विकल्प रहते हैं, तब तक सम्यग्दर्शन नहीं होता। यही बात कर्त्ता-कर्म अधिकार में भी आई थी। **(क्रमशः)**

आत्मानुभूति की दशा शुद्ध भाव और आत्मानुभूति प्राप्त करने का विकल्प शुभभाव। आत्मानुभूति प्राप्त करने के विकल्प अशुभभावों के अभावपूर्वक ही आते हैं। आत्मानुभूति की प्राप्ति के काल में हिंसादि और भोगादि के विकल्प बने रहें ह्न यह संभव ही नहीं।

आत्मानुभूति प्राप्ति के लिये सन्नद्ध पुरुष प्रथम तो श्रुतज्ञान के अवलम्बन से आत्मा का विकल्पात्मक सम्यक् निर्णय करता है; पश्चात् आत्मा की प्रगट प्रसिद्धि के लिये, पर प्रसिद्धि की कारणभूत इन्द्रियों से मतिज्ञानत्व को समेटकर आत्माभिमुख करता है तथा अनेक प्रकार के नय पक्षों का अवलम्बन करनेवाले विकल्पों से आकुलता उत्पन्नकरनेवाली श्रुतज्ञान की बुद्धि को गौण कर उसे भी आत्माभिमुख करता हुआ विकल्पानुभवों को पारकर स्वानुभव दशा को प्राप्त हो जाता है। **ह्न मैं कौन हूँ, पृष्ठ : 14-15**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : समयसार और नियमसार आदि में ऐसा कहा है कि भगवान शुद्धात्मा में कोई औदयिकभाव हैं ही नहीं; जबकि तत्त्वार्थसूत्र में उसे (औदयिकभाव को) आत्मा का स्वतत्त्व कहा है ह्न इन दोनों की अपेक्षा समझाइये ?

उत्तर : समयसारादि में द्रव्यदृष्टि का वर्णन है। दृष्टि के विषय में पर्याय गौण हो जाती है। तत्त्वार्थसूत्र में प्रमाण के विषय का वर्णन है। औदयिकभावरूप से भी आत्मा स्वयं परिणमता है। आत्मा की ही वह पर्याय है, इसलिये उसे स्वतत्त्व कहा है। वह औदयिकभाव आत्मा के स्वकाल से अस्तिरूप हैं और कर्म से नास्तिरूप हैं अर्थात् कर्मोदय के कारण वह उदयभाव हुआ ह्न ऐसा वास्तव में नहीं है। पर से तो आत्मा का नास्तित्व है अर्थात् आत्मा और पर के बीच नास्तित्वरूपी महान दुर्ग खड़ा है, इसलिये परद्रव्य आत्मा का कुछ कर सके ह्न ऐसा नहीं बन सकता।

प्रश्न : पुरुष प्रमाण है कि वचन प्रमाण है ?

उत्तर : पुरुष की प्रमाणता से वचन की प्रमाणता है। सर्वज्ञ पुरुष को पहिचानने के बाद उसके वचनों को प्रमाण जानकर, उसमें कहे गये वस्तुस्वरूप को धर्मीजीव समझ जाता है, यदि पुरुष की प्रमाणता न हो तो वाणी भी प्रमाणरूप नहीं होती और जिसको निमित्तरूप में प्रमाणभूत वाणी नहीं, उसको अपने नैमित्तिकभाव में भी ज्ञान की प्रमाणता नहीं। प्रमाणज्ञान में प्रमाणरूप वाणी ही निमित्त होती है। अर्थात् सत् समझने में ज्ञानी की ही वाणी निमित्त होती है, अज्ञानी की नहीं। सर्वज्ञ पुरुष को पहिचाने बिना उसके वचन की प्रमाणता समझ में नहीं आती और उसके बिना आत्मा की समझ नहीं होती; इसलिये सबसे पहले सर्वज्ञ व सर्वज्ञता का निर्णय अवश्य करना चाहिये।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के निर्देशन में ...

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द सम्पन्न

मुम्बई (भायन्दर) : यहाँ नवनिर्मित श्री महावीर स्वामी दि. जिनमन्दिर की प्रतिष्ठा हेतु दिनांक 7 से 13 मई, 05 तक श्री 1008 नेमिनाथ दि. जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन मुमुक्षु समाज ट्रस्ट, भायंदर (वेस्ट) के तत्त्वावधान में सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ प्रतिदिन प्रात: पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों से होता था। प्रतिदिन अन्तर्राष्ट्रीय प्रवक्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर के पंचकल्याणक के विविध विषयों पर मार्मिक प्रवचनों के साथ-साथ प्रतिदिन प्रात: एवं दोपहर में पण्डित शैलेषभाई शाह तलोद एवं रात्रि में पण्डित उत्तमचन्दजी जैन सिवनी के आध्यात्मिक प्रवचन हुए।

इनके अतिरिक्त पं. प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, पं. अभयजी शास्त्री देवलाली, पं. राजेन्द्रजी जबलपुर, पं. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना, पं. हेमचन्दजी 'हेम' देवलाली, पं. प्रकाशदादा मैनपुरी, पं. मिठालालजी दोशी हिम्मतनगर, पं. रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, पं. चन्दुभाईजी मेहता फतेपुर, पं. बाबूभाई मेहता फतेपुर, पं. मणीभाई मुनई, पं. रत्नेशजी मेहता हिम्मतनगर एवं पं. पंकजभाई के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त हुआ।

सम्पूर्ण प्रतिष्ठा-विधि बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री के निर्देशन एवं प्रतिष्ठाचार्यत्व में सह-प्रतिष्ठाचार्य ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर गजपंथा, पं. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पं. मधुकरजी जलगाँव, पं. ऋषभजी छिन्दवाड़ा, पं. राजकुमारजी बांसवाड़ा, पं. मनीषजी पिड़ावा, पं. सुबोधजी शाहगढ़, पं. विरागजी जबलपुर, पं. सुदीपजी भोपाल, पं. बाबूलालजी बांझल गुना, पं. सुकुमालजी झांझरी उज्जैन आदि विद्वानों द्वारा शुद्ध आम्नायपूर्वक सम्पन्न कराई गयी।

इस अवसर पर मूलनायक 1008 श्री महावीर भगवान तथा विधिनायक श्री नेमिनाथ भगवान के अतिरिक्त श्री चन्द्रप्रभ भगवान, श्री शांतिनाथ भगवान, श्री कुंथुनाथ भगवान, श्री अरनाथ भगवान की मनोज्ञ भाववाही प्रतिमायें विराजमान की गयी।

10 मई को गुरुदेवश्री की 116 वीं जन्मजयंती के अवसर पर जिनालय में 116 स्वर्णकलशों की स्थापना की गई। रात्रि में गुरुदेवश्री के जीवनचरित्र पर विद्वत्संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

महोत्सव में नेमिकुमार के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती ललीताबेन एवं श्री चंपकलाल गांधी (तलोद) भायंदर ने तथा राजमती राजुल के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती ऊषाबेन एवं श्री राकेशकुमार शाह (तलोद) भायंदर ने प्राप्त किया।

सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री सुनीलकुमार जयंतीलाल शाह एवं श्रीमती रीटाबेन सुनीलजी शाह (सदानामुवाडा) भायंदर तथा यज्ञनायक श्री रमेशभाई मणीलाल कोटड़िया ओरान (मुम्बई) थे।

सांस्कृतिक कार्यक्रम श्री वीतराग-विज्ञान पाठशाला, भायन्दर द्वारा सम्पन्न कराये गये।

इस अवसर पर लगभग 40 हजार रुपयों का सत्साहित्य तथा हजारों रुपयों के ऑडियो व सी.डी. कैसिट्स घर-घर पहुँचे।

ह्न वरूण शाह

३९ वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

*** देश के विभिन्न प्रान्तों से पधारें हुये 1485 आत्मार्थी ज्ञानयज्ञ में सम्मिलित। * प्रात: 5 से रात्रि 10 बजे तक विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से 13 घण्टे अविरल ज्ञानगंगा प्रवाहित। * शिविर में 53 विद्वानों का समाज को लाभ मिला। * बालबोध एवं प्रवेशिका प्रशिक्षण में 192 विद्यार्थी सम्मिलित। * प्रवचनसार, अष्टपाहुड एवं पंचास्तिकाय के हिन्दी पद्यानुवाद की संगीतमय कैसिट का विमोचन। * वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक के कुल 58 नये सदस्य बनें। * शिविर में 75 हजार, 270 रुपयों का सत्साहित्य एवं 20 हजार रुपयों के कैसिट्स बिके।**

कोल्हापुर (महा.) : यहाँ पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित एवं श्री दिग. जैन सर्वोदय स्वाध्याय ट्रस्ट, कोल्हापुर द्वारा आयोजित 39 वाँ शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर दिनांक 13 मई से 30 मई, 05 तक अनेक सफलताओं सहित सम्पन्न हुआ।

शिविर का उद्घाटन शुक्रवार, दिनांक 13 मई, 2005 को माननीय विधायक श्री गजेन्द्रजी ऐनापुरे के करकमलों से हुआ। झण्डारोहणकर्त्ता सौ. इन्दूमति अण्णासाहेब खेमलापुरे, घटप्रभा थीं।

समारोह की अध्यक्षता डॉ. विलासराव संघवी ने की। मुख्यअतिथि माननीय विधायक श्री राजू शेट्टी तथा विशिष्टअतिथि श्री अभयकुमार सालुंखे एवं बापूसाहेब कल्लप्पा नरदेकर कुपवाड़ थे।

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने शिक्षण-शिविरों के महत्व पर प्रकाश डाला। ब्र. यशपालजी जैन ने पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का तथा श्री शांतिनाथजी खोत ने श्री दि. जैन सर्वोदय स्वाध्याय ट्रस्ट का परिचय दिया। सभा का संचालन पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने किया।

शिविर के आमंत्रणकर्त्ता श्रीमती वरजूबेन के सुपुत्र श्री जवेरचन्द, हीरालाल, अशोककुमार, ब्रजलाल, रमेशकुमार, महेन्द्रकुमार एवं समस्त हथाया परिवार घाटकोपर, मुम्बई तथा एक मुमुक्षु भाई मुम्बई थे। विद्यमान 20 तीर्थंकर विधान का आयोजन श्री अरविन्दजी जैन परिवार द्वारा हुआ।

शिविर में प्रतिदिन प्रात: डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचनसार की प्रारंभिक गाथाओं पर तथा रात्रि में भगवान महावीर का जीवन दर्शन एवं सिद्धान्तों पर मार्मिक प्रवचन हुये।

रात्रिकालीन प्रथम प्रवचनों में पं.धन्यकुमारजी भोरे कारंजा, पं. रतनचन्दजी भारिल्ल, पं. धन्यकुमारजी बेलोकर, पं.अभयकुमारजी शास्त्री, पं.शांतिजी पाटील, पं. संजीवजी गोधा, पं.विक्रान्तजी शहा, पं. जिनचन्दजी आलमान, पं. धर्मेन्द्रजी शास्त्री एवं पं. अनंतजी विश्वंभर का लाभ मिला।

दोपहर व्याख्यान माला में प्रारंभिक 10 दिनों तक पं. राजेन्द्रजी जबलपुर वालों के प्रवचनों के अतिरिक्त पं. फूलचन्दजी मुक्किरवार, विदुषी शुद्धात्मप्रभा टडैया, पं.जीवेन्द्रजी जडे, पं. विक्रान्तजी शहा, पं.प्रवीणजी शास्त्री, पं. राजेन्द्रजी बंसल एवं पं.अमोलजी संघई के प्रवचनों का लाभ मिला।

मराठी भाषा में हुये प्रवचनों में पं. आलोकजी शास्त्री, पं.कीर्तिजयजी शास्त्री, पं.नन्दकिशोरजी शास्त्री, विदुषी स्वयंप्रभाजी, पं.गुलाबचन्दजी शास्त्री, पं.शांतिनाथजी वसगडे, पं.संजयजी राऊत, पं.प्रदीपजी माद्रप, पं.किशोरजी बंड, पं.नेमिनाथजी बालिकाई, पं.विजयजी कालेगोरे, पं.शीतल हेरवाडे, पं.राजेन्द्रजी पाटील, पं.प्रशांतजी मोहरे, पं.रोहन रोटे एवं पं.प्रसन्न शेटे का लाभ मिला।

प्रौढ़ कक्षायें – पं. अभयकुमारजी शास्त्री ने क्रमबद्धपर्याय, ब्र. यशपालजी ने गुणस्थान विवेचन, पं. शांतिकुमारजी पाटील ने तत्त्वार्थसूत्र, पं. संजीवकुमारजी गोधा ने नयचक्र तथा पं. विक्रान्तजी एवं पं. अमोलजी ने चार अभाव की कक्षा ली। प्रात: 5 बजे की कक्षा में पं. कोमलचन्दजी टड़ा, पं. कमलचन्दजी पिड़ावा, पं. नरेन्द्रजी जबलपुर एवं पं. राजकुमारजी बांसवाड़ा का लाभ मिला।

प्रशिक्षण कक्षायें – बालबोध प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक एवं शिक्षण पद्धति की मुख्य कक्षा पं. रतनचन्दजी भारिल्ल द्वारा ली गई। प्रवेशिका प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक कक्षा पं. अभयकुमारजी शास्त्री एवं प्रवेशिका शिक्षण पद्धति की मुख्य कक्षा पं. कोमलचन्दजी टड़ावालों ने ली।

प्रशिक्षण अभ्यास कक्षाओं में उक्त विद्वानों के अतिरिक्त श्रीमती रंजना बंसल, श्रीमती लता रोम, कुमारी अनुप्रेक्षा जैन, पं. उमाकान्तजी शास्त्री, पं.संतोषजी मिन्चे एवं पं.रमेशजी शिरहट्टी का सराहनीय सहयोग रहा। बालवर्ग की कक्षाओं का संचालन डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया के निर्देशन में हुआ; जिसमें लगभग 150 छात्र सम्मिलित हुये। ज्ञातव्य है कि अभ्यास कक्षायें हिन्दी, मराठी, कन्नड एवं अंग्रेजी भाषाओं में संचालित होती थी।

विमोचन : श्री भबूतमलजी भण्डारी परिवार, बैंगलोर द्वारा डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा किये गये प्रवचनसार पद्यानुवाद एवं अष्टपाहुड़ पद्यानुवाद तथा पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल द्वारा किये गये पंचास्तिकाय पद्यानुवाद की संगीतमय ऑडियो कैसिट्स एवं सी.डी का विमोचन किया गया।

शिविर में डॉ. महावीरप्रसाद जैन उदयपुर द्वारा लिखित शोध प्रबन्ध 'डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल व्यक्तित्व एवं कृतित्व'; सत्ता का सुख, सुख की तलाश, संस्कार का चमत्कार, सिद्धलोक व सिद्धत्व प्राप्ति के साधनासूत्र, छहढाला मराठी पद्यानुवाद एवं जिनेन्द्र-अष्टक आदि पुस्तकों का विमोचन हुआ।

दिनांक 28 मई को डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा **पण्डित जिनचन्दजी शास्त्री** का अभिनन्दन किया गया। समारोह पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल की अध्यक्षता एवं डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल की गरिमामयी उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। ट्रस्ट द्वारा पं. जिनचन्दजी शास्त्री को शाल, श्रीफल, प्रशस्ति एवं नकद राशि भेंटकर सम्मानित किया गया। इसी अवसर पर पताशे प्रकाशन संस्था ने भी पण्डित जिनचन्दजी का सम्मान किया।

बालबोध प्रशिक्षण में प्रथम स्थान विपुल चौगुले मालगाँव, द्वितीय स्थान कु.राधिका जैन कोलकाता एवं तृतीय स्थान व्रतेश जैन बकस्वाहा ने प्राप्त किया तथा प्रवेशिका प्रशिक्षण में कु.परिणति पाटील प्रथम, अंकित जैन लूणदा द्वितीय एवं भारती जैन तृतीय स्थान पर रहीं।

शिविर के विशेष कार्यक्रमों में दिनांक 22 मई को **पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट एवं भारतवर्षीय वीतराग-विज्ञान पाठशाला समिति का अधिवेशन**, दिनांक 27 मई को **श्री दि. जैन सर्वोदय स्वाध्याय ट्रस्ट का अधिवेशन,** दिनांक 29 मई को **प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन** तथा दिनांक 30 मई को **दीक्षान्त एवं समापन समारोह** का आयोजन किया गया।

कोल्हापुर नगर में आयोजित इस प्रशिक्षण शिविर के माध्यम से महाराष्ट्र प्रान्त में महती धर्म प्रभावना हुई।

नोट – शिविर के विस्तृत समाचारों के लिये जैनपथप्रदर्शक जून (द्वितीय),05 का अंक देखें।

विद्वत्परिषद दक्षिण भारत इकाई का गठन

कोल्हापुर : प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 29 मई, रविवार को श्री अ.भा.दि. जैन विद्वत्परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल की अध्यक्षता में विद्वत्परिषद् की दक्षिण-भारत इकाई का राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न हुआ। विद्वत्परिषद् के मंत्री डॉ. राजेन्द्र बंसल ने संस्था का परिचय दिया। डॉ. एस.पी. पाटील सांगली ने दक्षिण भारत में विद्वानों को परिषद् से जुड़ने का आह्वान किया। ब्र. यशपाल जैन, पं. रतनचन्दजी भारिल्ल तथा पं. मनोहर मारवडकर ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। इस अवसर पर श्रीमती इन्दुमती अण्णासाहेब खेमलापुरे को साहित्य प्रकाशन में विशेष सहयोग प्रदान करने हेतु सम्मानित किया। संचालन श्री अखिल बंसल ने किया। इकाई की कार्यकारिणी का गठन निम्नप्रकार हुआ ह्न

संरक्षक ह्न ब्र. धन्यकुमारजी भोरे कारंजा, डॉ. विलास संघवे कोल्हापुर, डॉ. सुभाषचन्द अक्कोडे जयसिंगपुर, **अध्यक्ष ह्न** डॉ. एस.पी. पाटील सांगली, **उपाध्यक्ष ह्न** डॉ. एच.सी. संघवे सोलापुर, प्राचार्य श्रीधर हेरवाडे कोल्हापुर, पं. मनोहर मारवडकर नागपुर, **सचिव ह्न** पं. जिनचंद शास्त्री हेर्ले, **संयुक्त सचिव ह्न** पं. महावीर पी. शास्त्री सोलापुर, **कोषाध्यक्ष ह्न** पं. महावीर पाटिल शास्त्री सांगली, **सदस्य ह्न** श्री श्रेणिक अन्नदाते डोंबीवली, श्री रावसाहेब पाटील सोलापुर, पं.आलोक शास्त्री कारंजा, सुश्री स्वयंप्रभा शास्त्री सांगली, **विशेष आमंत्रित ह्न** श्रीमती लीलावती जैन पुणे।

शिक्षण-शिविर सानन्द सम्पन्न

1. गुना (म.प्र.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल, गुना के तत्त्वावधान में श्री वीतराग-विज्ञान भवन में दिनांक 3 अप्रैल से 3 मई, 05 तक जयपुर से पधारी बाल ब्र. विदुषी कल्पनाबेन, सागर के सान्निध्य में आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर ब्र. कल्पनाबेन के प्रतिदिन प्रात: एवं रात्रि में गोम्मटसार कर्मकाण्ड एवं गुणस्थानों पर प्रवचन तथा दोपहर में श्री शांतिनाथ दि. जैन मंदिर में जीवसमास की कक्षा ली गई।

2. दाहोद (गुज.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल दाहोद के तत्त्वावधान में 6 से 15 मई, 05 तक बाल शिक्षण शिविर अत्यन्त उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित देवेन्द्रकुमारजी जैन बिजौलिया के नियमसार पर सारगर्भित प्रवचन हुए तथा दोपहर में विदुषी राजकुमारीजी जैन द्वारा समयसार के संवर अधिकार पर मार्मिक प्रवचन हुए। प्रात: एवं सायंकाल आपके द्वारा चार अभाव एवं कालचक्र विषय पर प्रौढ़कक्षा ली गई।

पं.शाकुलजी शास्त्री मेरठ, पं.अनुजजी शास्त्री जयपुर, पं. नयनजी शाह हैद्राबाद एवं पं.अंकुरजी शास्त्री देहगाँव ने बालकक्षा ली। कार्यक्रम पं. राकेशजी दोशी के निर्देशन में सम्पन्न हुए।

श्रुतपंचमी पर्व सानन्द सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री दि. जैन तेरापंथी बड़ा मंदिर में दिनांक 12 जून को श्रुतपंचमी के अवसर पर प्रात: श्रुतस्कंध मण्डल विधान का आयोजन किया गया। रात्रि में पण्डित संजीवकुमारजी गोधा के प्रासंगिक प्रवचन के उपरान्त विशेष ज्ञानवर्द्धक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

वैराग्य समाचार ...

सोभागमलजी पाटनी का निधन : एक अपूरणीय क्षति

1. स्व. पण्डित नेमीचन्दजी पाटनी के लघु भ्राता सम्पूर्ण दि. जैनसमाज में जाने- माने बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी 86 वर्षीय समाजसेवी **श्री सौभागमलजी पाटनी, मुम्बई** का दिनांक 6 जून, 05 को रात्रि में देहावसान हो गया है।

आप स्वयं तो एक अच्छे उद्योगपति थे ही, आपके बेटों ने भी पाटनी कम्प्यूटर सिस्टम (पी.सी.एस.) द्वारा कल्पनातीत प्रगति की। तत्त्वप्रचार-प्रसार एवं समाजसेवा की अनेक गतिविधियों में आपका सक्रिय सहयोग रहता था। नि:शुल्क साहित्य वितरण में आपकी विशेष रुचि थी। सत्साहित्य प्रकाशन के साथ श्री टोडरमल दि. जैन सि. महाविद्यालय के अन्तर्गत जैनदर्शन शास्त्री विद्वान तैयार करने हेतु आपकी ओर से 25 छात्रों को नि:शुल्क पढ़ाने की पूरी व्यवस्था है।

रविन्द्र पाटनी फैमिलि चैरिटेबल ट्रस्ट के माध्यम से बीमार, वृद्ध, बेसहारा, निर्धन आदि अनकों को सहयोग दिया जाता है। आपके निधन से दिगम्बर जैन समाज ने एक नि:स्वार्थ समाज सेवक को खो दिया है।

2. श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सि. महाविद्यालय के स्नातक पण्डित उमापतिजी शास्त्री, किलसात्तमंगलम् (तमिलनाडू) की धर्मपत्नी श्रीमती विमलमंजरी जैन का 34 वर्ष की अल्पायु में ही अस्वस्थता के कारण दिनांक 3 मई, 2005 को शांतभावपूर्वक देहावसान हो गया है। आप अनेक भाषाओं की जानकार, धार्मिक रुचि सम्पन्न एवं सरल स्वभावी महिला थी।

3. **अकोला निवासी** श्रीमती मिश्रीबाई गणेशलालजी बिलाला का गुरुवार दिनांक 5 मई को शांत परिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया है। आप धार्मिक विचारवन्त एवं स्वाध्यायप्रिय महिला थीं।

4. **ग्वालियर निवासी** श्री चम्पालालजी जैन का दिनांक 30 अप्रैल को स्वर्गवास हो गया है। आप अच्छे स्वाध्यायी थे तथा जिनवाणी के अध्ययन-मनन में सदैव सक्रिय रहते थे।

हम हृदय से भावना भाते हैं कि उक्त सभी दिवंगत आत्मायें शीघ्रातिशीघ्र सांसारिक दुखों से छूटकर परमपद की प्राप्ति करें।

महाविद्यालय का गौरव

श्री टोडरमल दि. जैन सि. महाविद्यालय, जयपुर में अध्ययनरत छात्र **नितिन कुमार जैन** सुपुत्र श्री चन्द्रप्रकाशजी जैन, सेमारी (उदयपुर-राज.) ने माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर (राज.) द्वारा संचालित उपाध्याय वरिष्ठ (12 वीं) की परीक्षा में 83 प्रतिशत अंक प्राप्त कर सम्पूर्ण राजस्थान में वरीयता सूची में **प्रथम स्थान** प्राप्त किया। कक्षा का परिणाम भी शत-प्रतिशत रहा।

साथ ही उपाध्याय कनिष्ठ (11 वीं) की परीक्षा में **कु. स्वाती जैन** सुपुत्री श्री रमेशचन्द जैन, जयपुर ने भी 83 प्रतिशत अंक प्राप्त कर कक्षा में **प्रथम स्थान** तथा **गजेन्द्र जैन** सुपुत्र श्री अमृतलाल जैन, उदयपुर ने 81 प्रतिशत अंक प्राप्त कर कक्षा में **द्वितीयस्थान** प्राप्त किया। सभी को बधाई !